वसंत जमशेदपुरी

जन्मतिथि- 08.12.1957
जन्मस्थान - जमशेदपुर (तत्कालीन बिहार अब झारखंड)
पिता का नाम- स्व० श्री देवकरण अग्रवाल
माता का नाम- स्व०श्रीमती प्रभाती देवी
मोबाइल नम्बर - 9334805484

प्रतिदिन बढ़ता जा रहा,इस धरती पर पाप |
कारण इसका एक है,असंतोष का ताप |
असंतोष का ताप,कौन जग को समझाए |
ले दौलत की चाह,कुपथ पर बढ़ता जाए |
कह वसंत कर जोड़,खो रहा सुख के पल-छिन |
तज संतोषी-नीड़,दुखी रहता है प्रतिदिन |

****

भारत पहुँचा चाँद पर,हुआ विश्व में शोर |
लगे नाचने लोग सब,होकर भाव-विभोर |
होकर भाव-विभोर,चाँद पर अब अपना ध्वज |
गढ़ते हम इतिहास,नहीं कुछ इसमें अचरज |
धरती का उपहार,चाँद पा करता स्वागत |
इसरो का आभार,विश्वगुरु के पथ भारत |

****

बेला आई पुण्य की,गायों को दो ग्रास |
पितरों का आशीष ले,आया आश्विन मास |
आया आश्विन मास,नमन पितरों को करना |
मान उन्हें आदर्श,सदा सत्पथ पर चलना |
कह वसंत कर जोड़,मधुर सुधियों का मेला |
प्रगटे श्रद्धा-भाव,श्राद्ध की सुंदर बेला |

****

केवट है धुन का धनी,जाना है उस पार |
चला सिंधु पर विजय को,लिए सबल पतवार |
लिए सबल पतवार,बड़ा यह चतुर खिवैया |
धीरे-धीरे मित्र,कूल तक लाए नैया |
कह वसंत कर जोड़,छोड़ कर बातें लटपट |
बढ़े लक्ष्य की ओर,धन्य है मेरा केवट |

****

दर्पण सच्चा मित्र है,मुख पर बोले साँच |
नहीं झूठ का साथ दे,नहीं साँच को आँच |
नहीं साँच को आँच,बहाए सुख की सरिता |
व्यर्थ प्रशंसा छोड़,सत्य की बाँचे कविता |
कह वसंत कर जोड़,करो मन इसको अर्पण |
जग में सच्चा मित्र,मुझे लगता है दर्पण |

****

ऋषि-मुनियों का देश यह,भारत इसका नाम |
कान्हा जन्मे इस धरा,हुए यहीं पर राम |
हुए यहीं पर राम,बुद्ध गौतम की धरती |
सुरसरि दे कर नेह,इसे है सिंचित करती |
कह वसंत कर जोड़,यहाँ डेरा खुशियों का |
स्वीकारो यह सत्य,देश यह ऋषि- मुनियों का |

****

सत्य-सनातन ने लिखी,जब असत्य पर जीत |
सुर सारे हर्षित हुए,असुर हुए भयभीत |
असुर हुए भयभीत,भटकते मारे-मारे |
किंकर्तव्यविमूढ़,कहाँ जाएँ बेचारे |
कह वसंत कर जोड़,यही है रीति पुरातन |
हारा सदा अधर्म,अजित नित सत्य-सनातन |

****

पौष-दिवाली मन गई,मिला नया त्योहार |
रामलला के पद-कमल,पूजूँ बारंबार |
पूजूँ बारंबार,घड़ी शुभ मंगल आई |
हुआ राममय देश,राम की फिरी दुहाई |
कह वसंत कर जोड़,धन्य उपवन का माली |
रखी धर्म की लाज,मनी फिर पौष-दिवाली |

****

बरसाने की राधिका,वृंदावन के श्याम |
दिव्य अलौकिक मूर्त्ति यह,बसो सदा हृद्धाम |
बसो सदा हृद्धाम,सफल यह जीवन कर लूँ |
निरख युगल-पद-कंज,तृप्ति नयनों में भर लूँ |
कह वसंत कर जोड़,प्रतीक्षा है आने की |
पलक बिछा कर राह,निहारूँ बरसाने की |

****

पगड़ी सिर की शान है,क्यों भूले हम आज |
शिरस्त्राण समझो इसे,समझो सिर का ताज |
समझो सिर का ताज,धूप से हमें बचाए |
रंग-बिरंगी पाग,सभी के मन को भाए |
कह वसंत कर जोड़,सुरक्षा सिर की तगड़ी |
करने को सम्मान,लोग पहनाते पगड़ी |

****